P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मधु काँकरिया के साहित्य में स्त्री विमर्श

निर्मम भारद्वाज
शोधार्थी
हिंदी विभाग,
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मधु काँकरिया की जन्मस्थली पश्चिमी बंगाल की राजधानी कोलकाता रही है जहाँ एशिया की सबसे बड़ी वेश्या मंडी है। चूँकि प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य में उस स्थान विशेष जहाँ उसने जन्म लिया है तथा वहाँ मौजूद तात्कालिक समस्या परिलक्षित होती है। अतः मधु काँकरिया के साहित्य में वेश्या समस्या स्त्री विमर्श के रूप में दिखाई देती है। मधु काँकरिया ने वेश्या जीवन की समस्या को व उनकी दयनीय दशा को प्रत्यक्ष देखा व उसको अपने साहित्य के माध्यम से आवाज भी दी है। एक साहित्यकार समाज में उपस्थित उस प्रत्येक समस्या को अपने साहित्य का विषय बनाता है जो उसके ह्रदय को विचलित करती है। मधु काँकरिया समाज में वेश्याओं की बढ़ती संख्या व गिरते जीवन स्तर से चिंतित दिखाई देती हैं। एक महिला कथाकार के तौर पर मधु काँकरिया किसी भी प्रकार की आलोचना से विचलित न होते हुए वेश्याओं की समाज में स्थिति का वर्णन अपने उपन्यास सलाम आखिरी व सेज पर संस्कृत के माध्यम से करती हैं। समाज में वेश्या की मौजूदगी एक ऐसा चिरंतन सवाल है जिससे समाज हर युग में अपने–अपने ढंग से जूझता रहा है। वेश्या को कभी लोगों ने सभ्यता की जरूरत बताया तो कभी कलंक बताया। कभी परिवार की किले बन्दी का बाई–प्रोडक्ट कहा तो कभी सभ्य व सफेदपोश दुनिया का गढ़ जो उनकी काम–कल्पनाओं और कुंठाओं के कीचड़ को दूर अंधेरे में ले जाकर डंप कर देता है। नारी का अर्थ यदि सृजन, प्रकृति और संपूर्णता है तो आज वेश्या बाजारों में यह तीनों नीलाम हो रहे हैं। यह नीलामी जीवन की हाड़ तोड़ यंत्रणाओं और भुखमरी की कोख से उपजती है। "पिचासी प्रतिशत वेश्यावृत्ति जीवन की चरम त्रासदी व भूख के मोर्चे के विरुद्ध की जाती है। दस प्रतिशत वेश्यावृत्ति धोखाधड़ी से उपजती है। यह धोखाधड़ी प्रेम के झूठे वादे, नौकरी का प्रलोभन, शहरी चकाचौंध से लेकर एक उच्च और सम्मानित जीवन के सब्जबाग दिखाकर की जाती है और बचे हुए पाँच प्रतिशत में वह होती है जो ढ़ाढ़ –बाट से रहने के लिए, जीवन की बोरियत दूर करने और अपने शौक के लिए अपनाई जाती है।"[1]

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, सामाजिक समस्या, वेश्यावृत्ति।

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श में नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलती है। स्त्री विमर्श एक वैश्विक विचारधारा है तथा हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखा है। महिला लेखन की परम्परा में मधु काँकरिया का नाम भी अपना स्थान रखता है। स्त्री विमर्श के रूप में वेश्या समस्या विस्तरित रूप से मधु काँकरिया के साहित्य में वर्णित की गई है। मधु काँकरिया का उपन्यास सलाम आखिरी तथा फाइल नामक कहानी वेश्याओं तथा वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे भीतर उन असहाय स्त्रियों के प्रति करुणा का उद्रेक करता है, जो किसी न किसी कारणवश इस तरह के बदनाम और नारकीय व्यवसाय में आज फँसी हुई हैं। मानव सभ्यता के अनुरूप यह मनुष्यता का चरम पतन है कि आज देह की सजी दुकानों में नारी देह एक डिपार्टमेंटल स्टोर बन गई है। जहाँ नारी अपने अलग–अलग अंगों का घंटों और मिनटों के हिसाब से अलग–अलग सौदा कर रही है। इन देह बाजारों का इतना यंत्रीकरण हो चुका है कि सभी मानवीय अनुभूतियाँ और मर्यादाएं स्वाहा हो चुकी हैं। मानव को ईश्वर की सर्वोत्तम भेंट प्रेम इन बदनाम गलियों में सामूहिक व्यभिचार में बदल चुकी है इन्हीं अनकहे सत्यों को उजागर करता है मधु काँकरिया का उपन्यास सलाम आखिरी।

उपन्यास की नायिका 'सुकीर्ति' एक लेखिका है। सुकीर्ति के माध्यम से मधु कॉंकरिया ने इन बदनाम गलियों का जीवन उजागर किया गया। सुकीर्ति जानना चाहती है सोनागाछी की उन गलियों की हकीकत। वहां बसने वाली वेश्याओं की हकीकत। क्योंकि तीन वर्ष पूर्व उसकी एक सहकर्मी इन गलियों में जाने कहाँ गुम हो गई थी जिसका कुछ पता नहीं चला तथा कुछ दिनों पूर्व ही उसके यहां काम करने वाली बाई की तेरह वर्षीय लड़की भी गुम हो गई जिसकी तलाश ने उसे इन गलियों में जाने को मजबूर किया। अपनी कामवाली की पुत्री को तलाशने की खातिर वह इन गलियों में कदम रखती है। वेश्याएं अपने जीवन के बारे में बताना नहीं चाहतीं हैं। अपना सर्वस्व गवांकर भी अपनी इज्जत का डर उन्हें व्याप्त रहता है। पेट की खातिर किये गए कार्य के खुलासा हो जाने का डर इनकी आत्मा से चिपका रहता है। विशेषकर जो आस–पास के गांव से आती हैं या जो पार्ट–टाइम या फ्लाइंग वेश्या होती हैं। एशिया की सबसे बड़ी वेश्या मंडी कलकत्ता के सोनागाछी तथा बहू बाजार के रेड लाइट एरिया की अंधेरी गलियों का सीधा साक्षात्कार कराते हुए मधु कॉंकरिया सभ्य समाज की संवेदनहीनता और कठोरता को भी साथ–साथ झिंझोड़ती चलती है। इस विवेक संपन्न समाज की निरंतर बहती चेतना के प्रवाह में एक द्वीप की सी आस्था के साथ प्रवाहित होता है उपन्यास सलाम आखिरी। वर्तमान में वेश्यावृत्ति और फ्लाइंग वेश्याएं बढ़ रही हैं। स्थिति यह है कि वेश्या संख्या में ज्यादा है और ग्राहक कम है। इस कारण आज वेश्याएं स्वयं को मिनटों के हिसाब से नीलाम कर रही है। देह बाजार का यंत्रीकरण इतना हो गया है कि सभी मानवीय अनुभूतियाँ और मर्यादाएं समाप्त हो चुकी हैं। कोलकाता की वेश्या मंडी में प्राय सभी वेश्याएं होती हैं– नेपाली, आगरा वाली, खासी मुसल्ली, बंगाली सभी तरह की हैं।

''राष्ट्रीय महिला आयोग 95 –96 के अनुसार भारत के महानगरों में दस लाख से भी अधिक वेश्याएं हैं और साल दर साल इसमें बीस प्रतिशत का इजाफा होता है। जहाँ कई महिला संगठन यह मांग कर रहे हैं कि वेश्याओं को यौनकर्मी एवं श्रमिक का दर्जा दिया जाए और वेश्यावृत्ति को उद्योग का वहीं कुछ बुद्धिजीवियों का यह मानना है कि वेश्याओं के बिना समाज उसी प्रकार है जिस प्रकार 'सोसायटी विद आउट गटर' है।"[2] सरकारी खाते में इनकी आय पर कोई आयकर नहीं लगाया जाता क्योंकि यह धन अनैतिक ढंग से कमाया जाता है। वोट देने का अधिकार होने पर भी यह वोट नहीं दे पाती क्योंकि सरकारी कर्मचारी इन गंदी एवं बदनाम गलियों में जाकर इनके नामों को सूची में डालने की जहमत नहीं उठाते। क्योंकि सभ्य समाज में इन्हे बुरी औरतें एवं कुलटा के रूप में देखता है। कोलकाता के सोनागाछी, बहू बाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर प्रसिद्ध लालबत्ती इलाके हैं। लेकिन इन सब में सबसे प्राचीन, सबसे स्थापित, बदनाम तथा खासी आबादी वाला, इतिहास और विरासत वाला इलाका है सोनागाछी। इन इलाकों में गली के मुहाने पर खड़ी रहती हैं 'ऑन–लाइन वेश्याएं' बिकाऊ है कि अदृश्य तख्ती लटकाए हुए...लिपि–पुती देह. ..चेहरे पर सस्ता और भड़काऊ मेकअप...रंगे होठ...सस्ती चमक के आभूषण...चटक और सस्ती किस्म की पोशाकें। ईश्वर की मानव को अमूल्य भेंट प्रेम और नारी की सबसे मूल्यवान संपत्ति शील के खरोद फरोख्त के ये रास्ते लाल बत्ती इलाकों के हैं जिनमे कोलकाता सबसे प्राचीन और एशिया की सबसे बड़ी वेश्या मंडी का मालिक है। कोई थुल–थुल, कोई कड़ियल, कोई श्यामा, कोई जामुनी, कोई गौखर्ण, कोई कम उम्र, तो कोई अधेड़ जैसे मांस की जीवंत देह न होकर पशु बाजार में रखा कोई गोश्त हो। मन ही मन चलता हिसाब नरदेह का, किसको चुने वह – जो कम से कम पैसों में अधिकतम मजा दे सके उसे। रूप, रस, गंध, स्पर्श एवं मदभरी मौज का वह रसायन, वह तृप्ति, वह कामसूत्र दे सके उसे जिसकी आदिम लालसा रही है उसे हर समय, हर युग एवं हर कालखंड में। धरती के किसी भी भूखंड में खड़े नर की तमाम शालीनता, मर्यादा और संबंधों के मुर्दाघरों के यह रास्ते। जहां हर आने वाला इस सत्य से नितांत अनभिज्ञ है कि जीवन में तमाम आधुनिकता के बावजूद सेक्स जीवित तभी रहता है जब वह भावनाओं से जुड़ा हो वरना तो वह सिर्फ मुर्दा जिस्मों के साथ हमबिस्तर होना होता है।

स्त्री विमर्श को अपने साहित्य में स्थान देने वाली मधु कॉंकरिया वेश्याओं की दयनीय स्थिति का वर्णन करती हैं कि एक देह भूख की मारी (वेश्या) और एक देह काम की मारी (पुरूष)। सभी तरह के ग्राहक इन गलियों में आते हैं नाक वाले (इज्जतदार), बिना नाक वाले (बेशर्म), टायर्ड –रिटायर्ड, पत्नी वाले, बिना पत्नी वाले, खुलेआम आने वाले, ट्रक–ड्राइवर, झाका वाले, भुटिया, मजदूर एवं रिक्शा चालक, असाध्य रोगों से ग्रस्त बूढ़े एवं बड़ी उम्र तक अविवाहित रहने वाले, एकदम नए नवेले पहली बार स्त्री संसर्ग का जायका लेने वाले भी, स्त्री दशा पर लिखने वाले लेखक, समाज सुधारक एवं पत्रकार भी है। लूंगी वाले, टाई वाले, नेहरू जैकेट वाले भी और गांधी टोपी वाले भी कहने का तात्पर्य है कि समाज में बसने वाला ऐसा कोई भी पुरुष वर्ग शायद ही हो जो इन गलियों को आबाद करने और अपनी कामाग्नि शांत करने इन बस्तियों बदनाम गलियों में इनका ग्राहक बनकर इनके घर के चूल्हे न जलाता हो। लेकिन वर्तमान में स्थिति दिन–ब–दिन बदतर होती जा रही है इन गलियों की और कामवालियों की। पहले इन गलियों में तवायफें कम होती थी और ग्राहक ज्यादा होते थे। तब इनका गुजर–बसर हो जाता था, लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि ग्राहक कम है और कामकन्यायें ज्यादा हैं। जिससे अब कम पैसों में यह ज्यादा से ज्यादा ग्राहक निपटाना चाहती है ताकि एक दिन की कमाई इतनी हो सके कि यह अपना घर चला सके।

इन वेश्याओं में कई स्त्रियां शादीशुदा भी होती हैं जो अपने गांव से शहर में काम करने की बात कहकर यह पेशा करती हैं। कई ऐसी होती हैं जो धोखे से इस पेशे में धकेल दी जाती हैं। कुछ ऐसी भी होती हैं जिन्हें यह पेशा विरासत में मिलता है किंतु वर्तमान में जितने निम्न धरातल पर यह पेशा पहुँचा है वैसा इसका प्रारंभ नहीं था। अपनी प्रारंभिक अवस्था में यह कला का स्त्रोत था। नृत्य, गीत, चौसर आदि का प्रदर्शन होता था। उच्च

तबके के लोग इन प्रदर्शनों के शौकीन होते थे। एक उच्च जीवन शैली व्यतीत करती थी तवायफें। लेकिन आज के समय ये कलाएं लुप्त हो गई और बचा रह गया सिर्फ काम और देह, जो इनके गिरते जीवन स्तर के परिचायक हैं। वर्तमान स्थिति यह है कि उच्च तबके व जीवन स्तर वाले बुद्धिजीवी लोग इन गंदी गलियों में जाना पसंद नहीं करते हैं। इन बदनाम गलियों के लगभग हर कमरे में बदबूदार अंधेरा, चुना झड़ती दीवारों वाले, जंग खाए जंगलों वाले एवं टूटे फर्शवाले होते हैं। स्वर्ण से भी महंगी कीमत इन इलाकों की है। इस कारण प्रायः प्रत्येक कमरा किसी कबूतर के दड़बे–सा प्रतीत होता है। सिर्फ देह की फिलॉसफी पर टिका होता है इन का संपूर्ण कर्मयोग।

सलाम आखिरी उपन्यास में सुकीर्ति की जिज्ञासा का समाधान करते हुए उसका मित्र मेघेन वेश्याओं की प्रारंभिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है कि– ''कलकत्ता का ऐतिहासिक लालबत्ती इलाका सोनागाछी जहां 17वीं शताब्दी के ढलते वर्षों से ही सामंती–जमीदार, सेठ, रईस, कला–प्रेमी, रसिक और बौद्धिक वर्ग आकर्षणों में बंधे यहां की कामिनीयो, नगर–बधुओं, सर्वभोग्या–बाईजियों और वेश्याओं की महफिलों को रोशन करते थे। बंगाल में वेश्यावृत्ति अपने किसी न किसी स्वरुप में 1690 के आसपास शुरू हुई थी। अंग्रेजों के आने से भी पहले पुर्तगाली व्यापारियों एवं यात्रियों के मनोविलास के लिए यहां के नवाबों ने यहां की पुत्रियों को बाकी ऐश्वर्य के साधनों के साथ ही भेंट करने की प्रथा की शुरुआत की थी। इनमें से कई विख्यात व्यापारियों एवं अंग्रेज गवर्नरों की रखेल भी थी। बंगाल के गवर्नर हेरी वेरेलेस्ट की रंगीनियाँ इतिहास के पन्नों पर आज भी अंकित हैं।"[3] लेकिन एक समय में जो सोनागाछी कला के बाजार के रूप में विख्यात था उसकी अधिकांश गलियाँ दुर्गा–चरण, अविनाश– कविराज स्ट्रीट तथा नवीन नीलमणि मित्र स्ट्रीट आदि से मुख्य कला डायनासोर की तरह धीरे–धीरे विलुप्त हो गई और बचा तो सिर्फ जिस्म की खरीद–फरोख्त का व्यापार।

सुकीर्ति इन गलियों में रहने वाली वेश्याओं की जीवन शैली, उनकी मन स्थिति का जायजा लेना चाहती है। उपन्यास में वर्णन किया गया है कि पिछले दो–तीन दशक से लालबत्ती इलाके लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अधिया सिस्टम सिकुड़ता जा रहा है। अधिकांश वेश्याएं जो स्वेच्छा से इस पेशे को अपनाती हैं वह स्वतन्त्र वेश्यावृत्ति में कदम रख रही हैं जिस कारण स्वतंत्र वेश्यावृति अस्तित्व में आ रही है। सोनागाछी की बदनाम गलियों का खासा इज्जतदार और समृद्ध चकला है मैडम मीना का जो कि एक फ्लैट में अपना चकला चलाती है। मीना आठ–नौ वर्षों पहले ही वेश्यावृति छोड़ चुकी है और अपना स्वतंत्र राजपाट चलाती है। जो कि आमतौर पर हर वेश्या का स्वप्न होता है। मीना के अधीन छह वेश्याएं हैं– नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, जूली, चंपा। चकले में काम करने वाली वेश्याओं को अन्य स्वतंत्र वेश्याओं की तरह सड़क पर ग्राहकों की प्रतीक्षा में खड़े नहीं रहना पड़ता है। लड़कियों की तरफ से उनकी मालकिन मीना ही बात करती हैं ग्राहकों से वो भी पूरे कैटलॉग के साथ। इस व्यवस्था को इन लालबत्ती इलाकों की भाषा में अधिया–सिस्टम कहा जाता है यानी आधा–आधा। कोई भी चकले की मालकिन किसी भी लड़की को चकले में रखने से पहले उसके शरीर को अच्छी तरह टटोलती है कि शरीर में कोई चमड़ी रोग तो नहीं, शरीर में दम है या नहीं, अंग विशेष कड़क होना चाहिए।

सलाम आखिरी उपन्यास वेश्या जीवन की यह सच्चाई भी पाठक वर्ग के समक्ष रखता है कि– ''कोलकाता शहर में कुल तीस हजार नियमित वेश्याएं और यदि संपूर्ण बंगाल की बात की जाए तो कुल पचास हजार वेश्याएं कार्यरत हैं। इन सबके अलावा हर साल पूर्वी बंगाल से शरणार्थी के रूप में आई युवतियाँ इस व्यवसाय से जुड़ती जाती हैं। इन सबके अतिरिक्त विभिन्न होटलों, शहर, गांव एवं फ्लैटों में देह व्यापार से जुड़ी तकरीबन दस हजार वेश्याएं और यदि मुख्य–मुख्य नगरों को भी शामिल कर लिया जाए तो राष्ट्रीय महिला आयोग 95 –96 के अनुसार दस लाख से भी अधिक अंकों को यह संख्या छूती हैं। हर वर्ष खतरनाक गति से बढ़ती इस वेश्यावृत्ति की संख्या में बीस प्रतिशत का इजाफा होता है।''[4]

'सलाम आखिरी' उपन्यास वेश्या जीवन के हर पहलुओं का वर्णन बड़े ही विस्तरित ढंग से करता है। "जब किसी चकले के अंतर्गत कोई कम उम्र की लड़की आती है तो (जो कि गैरकानूनी है) अधिकांश चकला मालकिनें पुलिस के डर से यह कार्य नहीं करती किंतु जो चकला मालकिनें लालच में आकर छुकरी रख लेती हैं (दस से पन्द्रह वर्ष तक की बच्ची को आम भाषा में छुकरी कहा जाता है) वे उसे पूर्ण रूप से वेश्या बनाने के लिए शोला (कागज का बना वह पदार्थ जो कि पानी पडते ही गल जाता है, जिसे बंगाली भाषा में शोला कहा जाता है) उसके अंग विशेष में घुसा दिया जाता है। उसके बाद उस बच्ची को पानी के टब में बैठा दिया जाता है। जैसे–जैसे पानी से शोला फूलता है वैसे–वैसे गुप्तांग में फैलाव आता जाता है। इस पद्दति से पुराने जमाने की औरतें अपने कान के छेदों को बड़ा करती थीं ताकि मोटे–मोटे गहने वह पहन सकें जबकि वेश्या जीवन में पद्धति का इस्तेमाल एक बच्ची को प्रौढ़ तथा संभोग के लिए तैयार करने के किया जाता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से करीब पांच से छह महीने में लड़की पूरी तरह तैयार हो जाती है।"[5] यह भी वेश्या जीवन का एक घिनोना रूप है जो कि उनके द्वारा बिना किसी की लाज–शर्म और दया–भावना के किया जाता है। सिर्फ पैसे और पेट की भूख की खातिर एक सामान्य बच्ची को पलक झपकते ही शारीरिक तौर पर एक औरत में तब्दील कर दिया जाता है।

''कानूनी रूप से संविधान यह कहता है कि अट्ठारह वर्ष के होने पर अपने जीवन निर्वाह के लिए आप कोई भी प्रोफेशन अपना सकते हैं अर्थात वेश्यावृत्ति भी। किंतु खुली वेश्यावृत्ति, चकला चलाना, सड़क पर खडे होकर ग्राहकों को आमंत्रित करना गैरकानूनी है, यदि वह इलाका किसी सार्वजनिक स्थान के रास्ते से दो सौ मीटर के अंतर्गत पड़ता हो। इस कानून के आधार पर सोनागाछी, बहू बाजार, कालीघाट आदि कलकत्ता के लालबत्ती इलाके इसकी चपेट में आते हैं क्योंकि यह सभी

सार्वजनिक स्थल के अंतर्गत आते हैं। इस कानून के चलते पुलिस सेक्शन की धारा 290 के अंतर्गत किसी भी रस्ते में खड़ी वेश्या को व्यभिचार फैलाने के आरोप में या ग्राहकों के साथ मारामारी करने के आरोप में पकडा जा सकता है।"[6] किंतु ढुलमुल कानूनी प्रक्रिया के कारण वैश्या की हैसियत के अनुसार उससे जुर्माने के तौर पर साठ–सत्तर रूपये लेकर छोड़ भी दिया जाता है। महिला उद्धार समितियाँ व कुछ समाजसेवी संस्थाएं वेश्यावृत्ति के कार्य को उद्योग का दर्जा दिलवाने के लिए आवाज उठा रही हैं। वेश्या उद्धार से जुड़े समाजसेवी संगठन निरंतर सरकार से यह मांग कर रहे हैं कि वेश्याओं के भविष्य के उद्धार के लिए वेश्यावृत्ति को एक उद्योग का, एक व्यवसाय का दर्जा दे दिया जाना चाहिए। वेश्याओं को अन्य कर्मचारियों की तरह यौनकर्मी कहा जाना चाहिए। महिला उत्थान समितियाँ व समाजसेवी संस्थाएं इन्हें यौनकर्मी का कानूनी पट्टा दिलाने की खातिर निरंतर अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं। ताकि यह वेश्याएं बिना पुलिस और कानून से डर के अपना कार्य सुचारू रूप से कर सकें और बात–बात पर पुलिस की धर–पकड़ व उनके साथ होने वाली बदसलूकी और अपमान को बंद किया जा सके। यह सामाजसेवी महिला उद्धार समितियाँ इन्हे एक वर्कर का टैग दिला कर इन्हें अपमान और पुलिसिया चक्कर से छुटकारा दिलवाकर इनकी जिंदगी बेहतर बनाने पर बल दे रही हैं। इन्हें अपमान तथा बदसलूकी के चंगुल से मुक्त करवा कर एक खुला गगन देने का कार्य इस प्रकार के सामाजिक संगठनों व महिला उद्धार समितियों द्वारा किया जा रहा है।

उद्देश्य

नारी जीवन की सबसे गंभीर समस्या आज वेश्यावृत्ति की समस्या है जिसका उन्मूलन होना एक स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है। स्त्री विमर्श की अत्यंत गम्भीर समस्या को अपने शोध पत्र के माध्यम से पाठकों के समक्ष लाना ही इस पत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

वेश्यावृत्ति की समस्या वर्तमान में इतने व्यापक रूप से इस समाज के अंदर तक अपनी जड़ जमा चुकी है कि अगर किसी चमत्कारिक ढंग से वेश्यावृति रोक भी दी जाए तो यह वेश्याएं जीविकोपार्जन के लिए अन्य किसी कार्य के अभाव में भूखी मर जाएंगी। क्योंकि इनके पास न तो किसी प्रकार की शिक्षा होती है न ही कोई हुनर या हस्त–कौशल ही इनके पास होता है, न ही किसी प्रकार का कोई आधारभूत संरक्षण इनके पास होता है। आज की तारीख में निन्यानबे प्रतिशत वेश्याएँ पेट की मारी हैं। इनमें से कठिनता से ही कोई वेश्या हो जो तबीयत की मारी हो। सभ्यता और विकास की यात्रा क्लोनिंग और इंटरनेट तक पहुंच चुकी है किंतु औरत आज भी वही खड़ी है। अपनी देह को लिए देह की भाषा के साथ। बदनाम गलियों में इन वेश्याओं को खुलेआम वेश्या न कहकर ढकी हुई भाषा में लाइनवाली या लाइन का काम करने वाली कहा जाता है। परिवार, समाज और सभी प्रकार की मर्यादाओं से कटी, सहिष्णुता की विश्वबैंक ये लाइनवालियां वर्षों से खड़ी है इन गलियों में, इन सड़कों पर, एक–रस तथा ऊब भरी नारकीय दिनचर्या सदा से जीती हुई। किंतु इतने पर भी इनके जड़ होते मन में भी कोई स्वप्न सदा से फड़फड़ाता हुआ कि शायद आज कुछ ऐसा हो जाए चमत्कारी, अद्भुत, असाधारण कि इनकी जिंदगी पलट जाये। इन्हीं ग्राहकों में से निकल आए कोई प्रेमी, कोई कद्रदान कि कायापलट हो जाए इनकी, मुक्त हो जाए वे इस निकम्मी अंधेरी जिंदगी से। लेकिन अंधेरे में सुलगती इन जिंदगियों के साथ ऐसा कुछ नहीं घटता और बरसों से उनका यह विश्वास थोड़ा और पुख्ता हो जाता है कि अब यही उनकी नियति है। अब रोशनी का कोई काफिला नहीं आने वाला इन गलियों से जो इनकी जिंदगी के रंग और स्वाद को लौटा सके और इसी सत्य के साथ अपने जीवन का निर्वाह करती हैं।

सुझाव

मधु काँकरिया ने अपने उपन्यास सलाम आखिरी तथा फाइल नामक कहानी के माध्यम से वेश्या समस्या को पाठकों के समक्ष रखा है अतः मधु काँकरिया के साहित्य के अध्ययन के उपरांत यह सुझाव दिया जा सकता है कि वेश्या समस्या का पूर्ण उन्मूलन ही एक सामान्य स्त्री को वेश्या बनने से रोक सकता है। सरकार द्वारा जबरन वेश्यावृत्ति में धकेलने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए तथा अगर कोई वेश्या अपना पेशा छोड़ साधारण जीवन जीना चाहती है तो उसे ऐसे कार्य व कौशल उपलब्ध कराए जाएं की वह इज्जत से अपना जीवन गुजार सके।

सन्दर्भ सूची

1. *सलाम आखिरी - उपन्यासः- मधु काँकरिया, (तीसरा संस्करण सन 2016) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – पृष्ठ संख्या 8*
2. *वही – पृष्ठ संख्या 9 /*
3. *वही – पृष्ठ संख्या 20 /*
4. *वही – पृष्ठ संख्या 166 ।*
5. *वही – पृष्ठ संख्या 113 ।*
6. *वही – पृष्ठ संख्या 152 ।*